International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030; Impact Factor: RJIF 5.24
Received: 26-12-2018; Accepted: 29-1-2019
www.advancedjournal.com
Volume 4; Issue 1; January 2019; Page No. 138-141

आदिवासी हाट-बाजारों की व्यापार अवधि: झाबुआ के सन्दर्भ में अध्ययन

डॉ. हरि सिंह मीणा
अतिथि विद्वान (भूगोल विभाग), शासकीय महाविद्यालय, शिवपुरी, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
क्षेत्र के हाट–बाजारों में अध्ययन हेतु व्यापार अवधि एक रूचिकर पक्ष हैं। सभी हाट–बाजार व्यापार हेतु समरूप अवधि वाले नहीं होते हैं। हाट–बाजारों का बाजार समय, उनकी अवस्थिति, हाट–बाजार पहुँचने के लिए उपलब्ध यातायात सुविधाओं और स्थान जहाँ से पूर्णकालिक व्यापारी आते हैं, के अनुसार भिन्न होते हैं। हाट–बाजार में व्यापार केवल कुछ घण्टे ही चलता हैं। पहले कुछ घण्टे में लोगों के एकत्रित होने में अंतिम समय मुख्य रूप से मदिरापान और लोगों के विर्सजन में लगता हैं।

मूल शब्दः पूर्णकालिक, अवस्थिति, मदिरापान, विर्सजन।

प्रस्तावना
व्यापार की प्रक्रिया के द्वारा विक्रेताओं और क्रेताओं के मध्य अर्न्तक्रिया की आवृत्ति और तीक्ष्णता एक हाट से दूसरे में महत्वपूर्ण रूप से परिवर्तित होती हैं। बाजारों के आकार में भिन्नता और उनके व्यापार परिमाण कई कारणों द्वारा प्रभावित होते हैं। कुछ कारक जो हाट–बाजार के व्यापार अवधि को निर्धारित करते हैं उनमें उसकी अवस्थिति, चाहे वह नगर के निकटतम अवस्थित हो या सुदूर पहाड़ियों के मध्य, परिवहन तंत्र, ग्राम का कृषीय और अकृषीय आर्थिक आधार और अधिवास का जनसंख्या आकार शामिल हैं। उपर्युक्त कारकों के अतिरिक्त हाट–बाजार की व्यापार अवधि बाजार के पश्च प्रदेश के संसाधनों पर भी निर्भर करता हैं। वृद्धि या अवनति की ओर अग्रसर हाट–बाजार का भविष्य महत्वपूर्ण रूप से पश्च प्रदेश के आर्थिक स्वास्थ्य पर निर्भर करता हैं। हाट–बाजार ग्राम प्रशासनिक अधिष्ठान होने के बल पर भी महत्ता ग्रहण कर सकता है।

2. अध्ययन क्षेत्र
प्रस्तुत अध्ययन का क्षेत्र मध्यप्रदेश का पूर्व झाबुआ जिला हैं, जो वर्तमान में झाबुआ और अलीराजपुर में विभक्त हो गया हैं। अध्ययन क्षेत्र का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 6793 वर्ग कि.मी. हैं, जो राज्य का 1.52% क्षेत्रफल हैं यह दो आदिवासी उपयोजना क्षेत्रों, 8 तहसीलों, 12 आदिवासी विकासखण्डों और 1323 आबाद गांवों से बनता हैं। अध्ययन क्षेत्र उदारीकरण एवं मुक्त बाजार व्यवस्था और सूचना क्रांति एवं नगरीय बाजार व्यवस्था के इस दौर में भी अपने परम्परागत साप्ताहिक हाट–बाजारों के लिए (विशेषकर भगोरिया हाट) लोकप्रिय है। यह ऐसा क्षेत्र हैं, जहाँ निर्धनता, पिछड़ापन न्यूनाधिक रूप से संरचनात्मक अवयव हैं। अतः अध्ययन के उद्देश्य की प्रकृति हेतु कई अर्थों में आदर्श हैं।

3. शोध समस्या
प्रस्तावित शोध समस्या का अंतर्निहित मूल शोध–प्रश्न यही है कि उदारीकरण और मुक्त बाजार–व्यवस्था के इस दौर ने परम्परागत आदिवासी हाट–बाजारों की व्यापार अवधि किस रूप में प्रभावित किया है और इन परिवर्तनों की वर्तमान प्रकृति क्या है।

4. उपकल्पना
शोध समस्या को दृष्टिगत प्रस्तुत अध्ययन हेतु निम्नलिखित उपकल्पनाएँ संकल्पित की गई हैं :

(अ) विगत 10–15 वर्षों में बाजार–व्यवस्था में हुए परिवर्तनों के परिणाम स्वरूप आदिवासी हाट–बाजारों के पारंपरिक स्वरूप में महत्वपूर्ण संरचनात्मक एवं क्रियात्मक बदलाव हुए हैं ;
(ब) तीव्र गति के इन बदलावों का सीधा प्रभाव इनके व्यापार अवधि पर पड़ेगा।

5. उद्देश्य
प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य अध्ययन क्षेत्र के आदिवासी हाट–बाजारों की व्यापार अवधि के विभिन्न चरणों और समयावधि को परिलक्षित करना है।

6. अध्ययन का समग्र एवं इकाई
विद्यमान हाट–बाजारों की व्यवस्था एवं प्रतिरूप का विश्लेषण करने तथा उदारीकरण एवं नई बाजार व्यवस्था का प्रभाव आकलित करने हेतु अध्ययन के समग्र क्षेत्र के आदिवासी ''साप्ताहिक हाट–बजार'' हैं एवं न्यूनतम इकाई ''चयनित बाजार'' हैं। सर्वेक्षण में सर्वेक्षित परिवार न्यूनतम इकाई रहेगा।

7. आँकड़ो के स्त्रोत
अध्ययन में द्वितीयक एवं प्राथमिक दोनों ही स्त्रोतों से आँकड़ों का संग्रहण किया गया हैं। द्वितीयक आँकड़े जिला सांख्यिकीय कार्यालय, कार्यालय भू–अभिलेख, विकासखण्ड कार्यालय तथा मण्डी समिति आदि से संकलित किए गए हैं। अवलोकन, तालिकाएँ एवं समूह चर्चा सार सभी 37 हाट–बाजारों हेतु किया गया है : परंतु पारिवारिक और क्रेता–विक्रेताओं की अनुसूचियाँ ब्लाक स्तर के 12 हाट–बाजारों में तीन प्रकार की अनुसूचियों का प्रयोग किया गया हैः

(i) अवलोकन तालिका
(ii) समूह चर्चा
(iii) साक्षात्कार अनुसूची

8. प्रतिचयन विधि
हाट–बजारों में क्रेताओं और विक्रेताओं से अलग–अलग साक्षात्कार किया गया हैं। इस हेतु दो प्रतिचयन तकनीकें–याद्दच्छिक प्रतिचयन तकनीक (Random Sampling Techniques) तथा स्तरित याद्दच्छिक प्रतिचयन तकनीक (Stratified Random Sampling Techniques) अध्ययन हेतु उपयोग में लाई गई हैं।

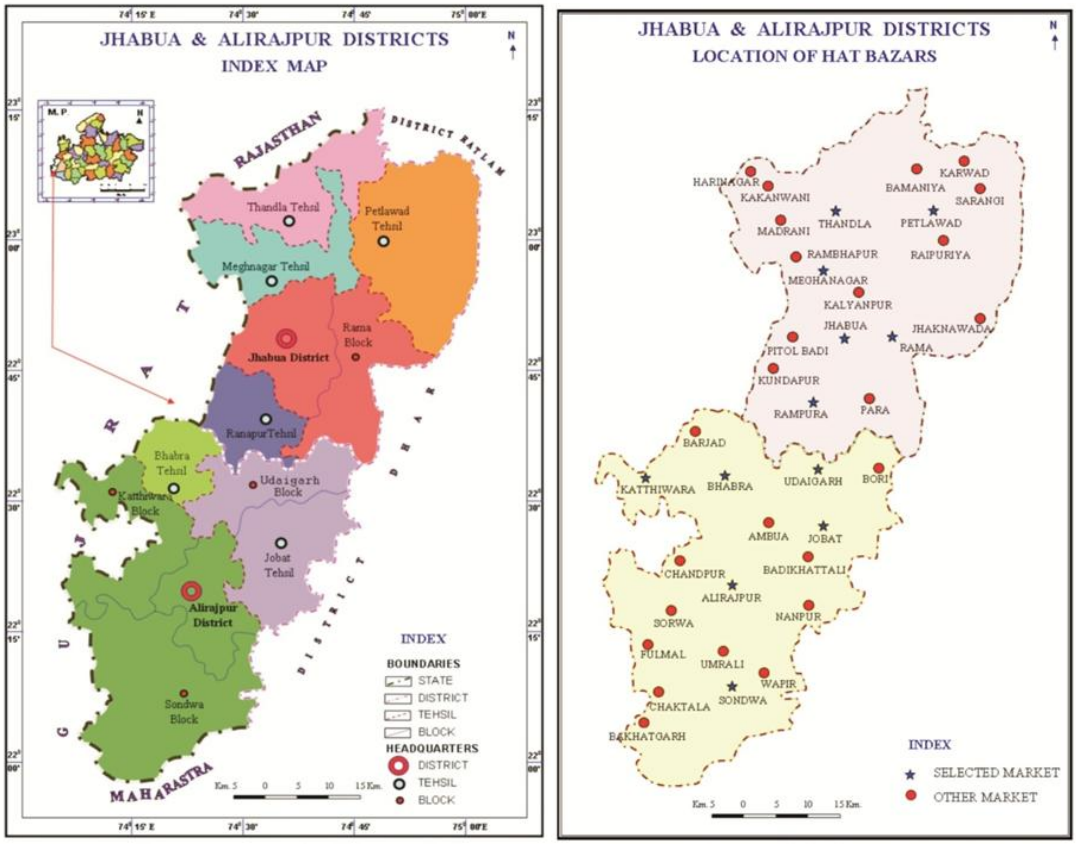

सारणी 1: अध्ययन क्षेत्र में हाट बाजार

क्र.	विकासखण्ड	हाट बाजार	बाजार दिवस	टिप्पणी
1.	थांदला	काकनवानी	रविवार	
2.		हरिनगर	बृहस्पतिवार	
3.		थांदला (नि.)	मंगलवार	
4.	मेघनगर	मदरानी	बुधवार	
5.		रम्भापुर	सोमवार	
6.		मेघनगर (नि.)	शनिवार	
7.	पेटलावद	बामनिया (नि.)	शनिवार	
8.		करवड	बुधवार	फसल ऋतु में
9.		सारंगी	बृहस्पतिवार	
10.		पेटलावद (नि.)	सोमवार	
11.		रायपुरिया	रविवार	
12.		झकनावदा	शनिवार	
13.	झाबुआ	कल्याणपुरा	बुधवार	
14.		पिटोलबड़ी	मंगलवार	
15.		झाबुआ (नि.)	रविवार	
16.	रामा	रामा (नि.)	शुक्रवार	
17.		पारा	बृहस्तपतिवार	
18.	राणापुर	कुन्दनपुर	सोमवार	
19.		राणापुर (नि.)	शनिवार	
20.	जोबट	जोबट (नि.)	बृहस्पतिवार	
21.		बड़ी खट्टाली	बुधवार	
22.	उदयगढ़	बोरी	बुधवार	
23.		उदयगढ़ (नि.)	शुक्रवार	
24.	भाभरा	बरझड	बुधवार	
25.		भाभरा (नि.)	सोमवार	
26.	आलीराजपुर	आम्बुआ	मंगलवार	
27.		आलीराजपुर (नि.)	सोमवार	
28.		नानपुर	शनिवार	
29.	कट्ठीवाड़ा	कट्ठीवाड़ा (नि.)	शुक्रवार	
30.		चाँदपुर	बुधवार	
31.		सोरवा	रविवार	

32.		फूलमाल	बृहस्पतिवार	
33.	सोण्डवा	उमराली	शनिवार	
34.		छकतला	रविवार	
35.		बखतगढ़	मंगलवार	
36.		सोण्डवा (नि.)	मंगलवार	भगोरिया विशेष
37.		वालपुर	शुक्रवार	

स्त्रोत– जिला सांख्यिकीय पुस्तिका/क्षेत्र सर्वेक्षण –2018

चूंकि आंतरिक क्षेत्रों में स्थित हाट बाजारों पर उदारीकरण प्रक्रिया का प्रभाव नही पड़ा हैं अतः अध्ययन में ब्लॉक स्तर के केवल 12 हाट–बाजारों को गहन अध्ययन हेतु चयनित किया गया हैं।

9. क्रेता

हाट बाजारों की अवधि 6 से 8 घण्टे की होती हैं। इस अवधि में क्रेताओं के व्यस्त समय में से साक्षात्कार हेतु समय जुटा पाना कठिन कार्य हैं। अतः हाट–बाजार में सम्मिलित क्रेताओं के लिए याद्दच्छिक प्रतिचयन तकनीक उपयोग की गई। बड़े और छोटे चयनित 12 ब्लॉक स्तरीय हाट–बाजारों में से औसतन 75 व्यक्तियों का साक्षात्कार हेतु चयन किया गया है, साथ ही गुणवत्ता को भी महत्व दिया गया हैं।

सारणी 2: हाट–बाजार अनुसार चयनित क्रेताओं की सारणी

क्र.	हाट–बाजार का नाम	टादिवासी		सामान्य		कुल	
		पुरूष	महिला	पुरूष	महिला	पुरूष	महिला
1.	थांदला	71	03	03	01	74	04
2.	मेघनगर	69	02	04	02	73	04
3.	पेटलावद	56	–	06	–	62	–
4.	झाबुआ	85	05	08	–	93	05
5.	रामा	79	03	09	–	88	03
6.	राणापुर	65	01	10	–	75	01
7.	जोबट	65	03	09	01	74	04
8.	उदयगढ़	71	02	10	–	81	02
9.	भाभरा	55	03	06	01	61	04
10.	आलीराजपुर	72	04	11	–	83	04
11.	कट्ठीवाड़ा	32	–	05	–	37	–
12.	सोण्डवा	53	03	08	01	61	04
		773	29	89	06	862	35

स्त्रोत– क्षेत्र सर्वेक्षण –2018

सारणी 3: हाट–बाजार अनुसार चयनित विक्रेताओं की सारणी

क्र.	हाट–बाजार का नाम	टादिवासी		सामान्य		कुल	
		पुरूष	महिला	पुरूष	महिला	पुरूष	महिला
1.	थांदला	02	–	23	01	25	01
2.	मेघनगर	03	02	15	05	18	07
3.	पेटलावद	02	–	19	–	21	–
4.	झाबुआ	05	01	30	03	35	04
5.	श्रामा	02	–	21	–	23	–
6.	राणापुर	04	–	19	02	23	02
7.	जोबट	07	01	19	02	26	03
8.	उदयगढ़	05	–	12	–	17	–
9.	भाभरा	04	01	07	04	11	05
10.	टालीराजपुर	05	01	19	02	24	03
11.	कट्ठीवाड़ा	02	–	08	–	10	–
12.	सोण्डवा	02	02	09	03	11	05
		43	8	201	22	244	30

स्त्रोत– क्षेत्र सर्वेक्षण –2018

विक्रेता

हाट–बजारों में शामिल होने वाले विक्रेताओं हेतु निर्मित अनुसूची के लिए स्तरित याद्दच्छिक प्रतिचयन तकनीक को ही अपनाया गया हैं। विक्रेताओं को उनके द्वारा बेचे जाने वालें उत्पादन के आधार पर स्तरित किया गया है। चयनित 12 हाट–बाजारों में औसत प्रति हाट 23 विक्रेताओं को साक्षात्कार हेतु चयनित किया गया हैं।

11. व्यापार अवधि

क्षेत्र कार्य की अवधि में प्रेक्षण करने और एकत्रित संमकों के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि क्षेत्र के सभी हाट–बाजारों के समय में बहुत भिन्नता मिलती हैं। आलीराजपुर तहसील के हाट–बाजार (नानपुर को छोडकर) प्रायः सुबह 7.00 बजे शुरू हो जाते हैं और दिन में 2.00 बजे तक समाप्त होना शुरू हो जाते हैं। इन हाट–बाजारों में व्यापार का उच्चतम समय 10 बजे से 12 बजे के मध्य होता हैं। हाट–बाजारों की आरम्भिक अवधि में 8 से 10 बजे के मध्य आदिवासी उनके उत्पाद के विक्रय करने और धन अर्जन करने में व्यस्त रहते हैं। वे वास्तव में स्वयं को 10.00 बजे के आस–पास क्रय प्रक्रिया में शामिल करते हैं। इस समय तक वे अपने उत्पादन का विक्रय कर क्रय हेतु धन प्राप्त कर लेते हैं। हाट–बाजारों में 10.00 बजे तक विक्रय क्रिया मंद होती हैं और 10. 00 से 12.00 बजे के मध्य विक्रय अधिकतम होता हैं। क्षेत्र के मध्यवर्ती एवं उत्तरी भाग के हाट–बाजारों, जिसमें नानपुर, जोबट, उदयगढ़, बोरी, पारा, रानापुर, झाबुआ, पेटलावद, रामा, पिटोल, कल्याणपुर, थांदला और मेघनगर शामिल हैं का समय 9.00 बजे से 3.00 बजे के मध्य हैं। इन हाट–बाजारों में प्रेक्षण किया गया हैं कि इनमें व्यापार का उच्चतम समय 12.00 बजे से 2.00 के मध्य होता हैं। सुबह 9.00 से 11.00 बजे के मध्य आदिवासी उनके उत्पादन का विक्रय कर धन अर्जन में संलग्न रहते हैं। दोपहर 12. 00 बजे के आस–पास वे अपनी क्रय क्रिया शुरू करते हैं। इस समय तक वे उनके उत्पाद का विक्रय कर धन प्राप्त कर लेते हैं। इन हाट–बाजारों में दोपहर तक विक्रय क्रिया निस्तेज (Sluggish) दिखाई पड़ती हैं और 12.00 से 2.00 बजे के मध्य विक्रय उच्चतम होता हैं।

हाट–बाजारों में सहभागी क्रय व्यापारी जो मुख्य रूप से दो प्रकार के होते हैं। एक कृषि उपज एवं अन्य उत्पादों का क्रय करने वाले तथा दूसरे जो कुक्कुट, बकरा–बकरी तथा गाय–बैल आदि का क्रय करते हैं, अपनी क्रय क्रिया हाट–बाजार में सबसे पहले शुरू करते हैं। क्षेत्र के हाट–बाजारों में कुक्कुट एवं पशुओं की क्रय–विक्रय गतिविधि आरम्भ के दो या तीन घण्टे तक ही चलती हैं। मुख्य हाट–बाजार का यह अंश हाट–बजार में व्यापार की उच्चतम गतिविधि शुरू होने से पहले ही समाप्त हो जाता हैं। अतः जब हाट–बाजार में व्यापार का उच्चतम समय शुरू होते है तब यहाँ से क्रय व्यापारी अपने क्रय कुक्कुट अथवा पशुओं को लेकर अपने गंतव्य की और प्रस्थान कर देते हैं। दूसरे कृषि उपज और अन्य उत्पादों के क्रय व्यापारी भी हाट–बाजार में उच्चतम व्यापार समय शुरू होते–होते प्रायः अपना क्रय पूर्ण कर लेते हैं। परंतु हाट–बाजार में जब व्यापार की उच्चतम गतिविधियाँ चल रही होती हैं उस अवधि में ये अपनी क्रय सामग्री को बांधकर वापसी यात्रा की तैयारी कर रहे होते हैं। और हाट–बाजार समाप्त होने के पहले ही ये गंतव्य को प्रस्थान कर जाते हैं।

अध्ययन क्षेत्र के प्राप्त संमकों से ऐसा माना जाता है कि निम्नतम पद (Hierarchy) वाले हाट–बाजार प्रायः 10.00 या उसके बाद

भरते हैं। आवश्यक नहीं कि देरी से भरने वाले हाट–बाजार दुर्गम क्षेत्रों में उपस्थिति हों और यही उनकी देरी के लिए विस्तृत रूप में जिम्मेदार हों। इनका एकमात्र कारण हैं कि ये हाट–बाजार जंगल क्षेत्रों की परिधि पर अवस्थित होते हैं और यही इन्हें अंशकालिक व्यापारियों और आदिवासी उपभोक्ताओं से तुलनात्मक रूप से अगम्य बनाता हैं। लेकिन यह धारणा क्षेत्र के हाट–बाजारों पर प्रभावी नहीं हैं। फुलमाल, छकतला और बखतगढ़ इसके उदाहरण हैं। ये हाट–बाजार दुर्गम क्षेत्रों में तथा वनों की परिधि पर हैं, परन्तु फिर भी ये हाट–बाजार सुबह 7.00 बजे ही प्रारम्भ हो जाते हैं। इसका मुख्य कारण इस क्षेत्र की परिस्थितियाँ तथा प्रथा ही हैं, दूसरे इस अध्ययन क्षेत्र में कुछ हाट–बाजार जैसे–कुन्दनपुर, रम्भापुर, मदरानी, करवड़, सारंगी ओर झकनावदा ऐसे भी हैं जो अभिगम्य (accessible) हैं और वनों की परिधि या दुर्गम क्षेत्रों में भी स्थित नहीं हैं, फिर भी इन स्थानों पर हाट–बाजार दोपहर में 1.00 बजे के बाद शुरू होता हैं और शाम को 6.00 बजे तक चलता हैं। इन हाट–बाजारों में व्यापार का उच्चतम समय 3. 00 बजे से 4.00 बजे के मध्य होता हैं। इन हाट–बाजारों में व्यापारी 12.00 बजे तक पहुँचते हैं और 1.00 बजे तक व्यापार हेतु दुकानें तैयार करते हैं। दोपहर 1.00 बजे के बाद आदिवासी क्रेता आना शुरू करते हैं। इन हाट–बाजारों में सारंगी अपेक्षाकृत बड़ा बाजार हैं कुछ आदिवासी उपभोक्ताओं ने बताया कि वे घर से अपनी यात्रा सुबह जल्द ही शुरू करते हैं, लेकिन हाट–बाजार में दोपहर तक ही पहुँचते हैं। उक्त तथ्य का ज्ञान होने के कारण ही व्यापारी भी हाट–बाजार में दोपहर 12.00 बजे तक ही पहुँचते हैं।

क्षेत्र के हाट–बाजारों की समयावधि पर, विशेष रूप से दक्षिणी भाग में, एक प्रभावशाली कारक हैं असुरक्षा की भावना क्योंकि आलीराजपुर और आसपास के क्षेत्र में अपराध प्रवृत्ति अधिक हैं। इसलिए यहाँ आदिवासी सूर्योदय के पश्चात् ही घर से हाट–बाजार के लिए यात्रा प्रारम्भ करते हैं और सूर्यास्त के पहले ही अपने गृह पहुँच जाना चाहते हैं। दक्षिणी क्षेत्र में हर हाट–बाजार का अपना प्रभाव क्षेत्र हैं। और इसीलिए आदिवासियों को हाट–बाजार पहुँचने के लिए लम्बी यात्रा नहीं करनी पड़ती हैं।

12. निष्कर्ष

अध्ययन से स्पष्ट है कि हाट बाजारों की व्यापार अवधि हाट बाजार केन्द्रो की अवस्थिति, संरचना, आकारिकी, कार्यिक स्वरूप, कार्यिक क्षेत्र, सेवा क्षेत्र, विपणित वस्तुओं की संख्या, यातायात सुविधाएँ, ग्राम का कृषिय और आकृषिय आर्थिक आधार, पश्च प्रदेश अधिवास का जनसंख्या आकार और सुरक्षा व्यवस्था द्वारा प्रभावित और निर्धारित होती है।

अतः अध्ययन क्षेत्र में एकत्रित समंको के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि सभी हाट बजारो में समय अवधि में बहुत विभिन्नता मिलती है। समान्यतः यह कहा जा सकता है कि दक्षिण और दक्षिण–पश्चिम के हाट बाजार सुबह 7:00 बजे से शुरू हो जाते है और दिन के 2:00 बजे तक समाप्त हो जाते है। उत्तर एवं मध्य अवस्थिति वाले हाट बाजार केन्द्र सुबह 9:00 से सांयकाल 5:00 बजे तक की अवधि में संचालित होते है। उत्तर–पूर्व एवं उत्तर–पश्चिम के हाट बाजार केन्द्र दोपहर बाद 1:00 बजे से प्रारम्भ होकर शाम 6:00 बजे व्यापार व्यवसाय करते है।

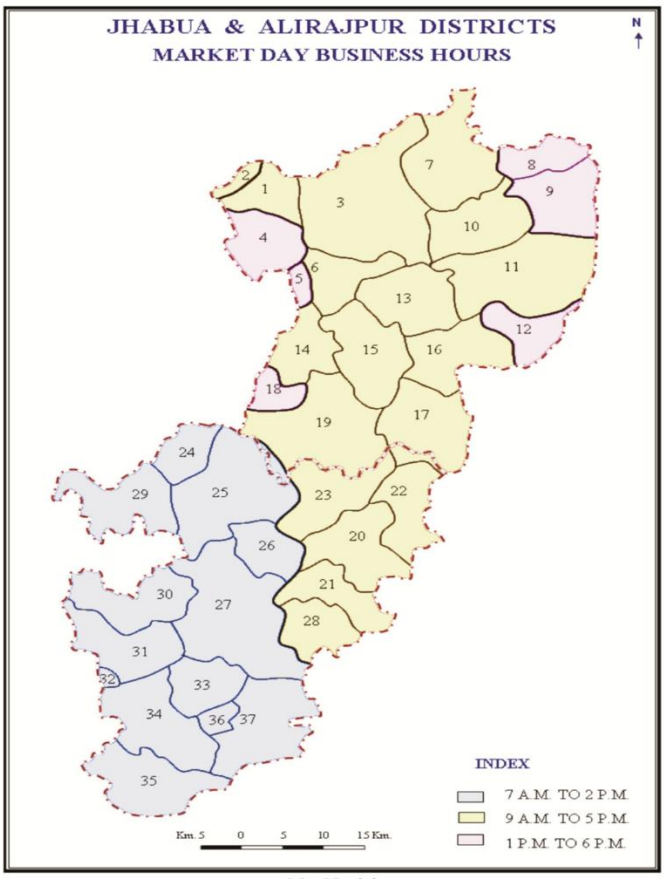

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Mishra JP. Agricultural Marketing in Tribal areas and development of rural and tribal market. NIAM, 2009, 30-40.
2. Rao, Murli Krishna. Marketing in Tribal Economy, Inter India Publications, 198848.
3. Kumar KNR, Raju VT. Indian Agriculture in the context of globalization. Bihar Journal of Agricultural Marketing. 1996; 4(4):331-334 (En, ref.)
4. Tamskar BG. The Role of Periodic Market Places as Center of Diffusion. The Deccan Geographer. 1984; 3(22):519-525.
5. Joshi YG. Process of Tribal Development in Scarce Resource Regions. A Project sponsored by MAPCOST, Bhopal, 1988, 104-114.
6. Working Plan for Jhabua market Division for 1965-66 to 1990-91, Vol I-text by K.G. Venkataraman
7. Statistical Year Book of Jhabua & Alirajpur 2018.
8. http://www.elitx.in/ presentation2018
9. http://www.researchandmarkets.com
10. http://jhabuaalirajpur.nic.in/factfile.htm
11. www.researchandmarkets.com December 15th 2018
12. www.sirdi.org Levering ICT Trough Weekly Market Centers, 2018.